अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब ''आ़शिक़ाने रसूल की 130 हिकायात मअ़ मक्के मदीने की ज़ियारतें'' से लिये गए मवाद की पहली क़िस्त़

Zaaireene Madina Ke Imaan Afroz Waaqiaat (Hindi)

ज़ाइरीने मदीना के ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त

कुल सफ़हात 32

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۭ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۭ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ज़ाइरीने मदीना के ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआत

येह रिसाला **(ज़ाइरीने मदीना के ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआत)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की
मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • Email : hindibook@dawateislamihind.net

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

यह मज़्मून "आशिक़ाने रसूल की 130 हि़कायात" के सफ़ह़ा 11 ता 40 से लिया गया है।

ज़ाइरीने मदीना के ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआत

दुआए अ़त्तार

या अल्लाह ! जो कोई रिसाला "**ज़ाइरीने मदीना के ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआत**" के 30 सफ़ह़ात पढ़ या सुन ले, उस को ईमान व आ़फ़िय्यत के साथ मदीने में मौत और जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न नसीब फ़रमा। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से रिवायत है कि साहि़बे मे'राज, मह़बूबे रब्बे बे नियाज़ صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब कोई बन्दा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो फ़िरिश्ता उस दुरूद को ले कर ऊपर जाता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पहुंचाता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : इस दुरूद को मेरे बन्दे की क़ब्र में ले जाओ येह दुरूद अपने पढ़ने वाले के लिये इस्तिग़फ़ार करता रहेगा और उस (बन्दए ख़ास) की आंखें इसे देख कर ठन्डी होती रहेंगी।" (جمع الجوامع ج ٦ ص ٣٢١ حدیث ١٩٤٦١)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ज़ाइरीने मदीना की 24 हिकायात

(इन हिकायात में मदीने की हाज़िरी वग़ैरा का बिल ख़ुसूस ज़िक्र है)

﴾1﴿ रौज़ए पाक से बिशारत

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते मौलाए काइनात, अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم फ़रमाते हैं कि ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार में जल्वागरी के तीन रोज़ बा'द एक बद्दू हाज़िर हुवा और उस ने अपने आप को क़ब्रे मुनव्वर पर गिरा दिया और उस की ख़ाके पाक अपने सर पर डाली और यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! जो कुछ आप ने **अल्लाह** तबारक व तआला से सुना है वोह हम ने आप से सुना है। (और वोह येह है :)

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَ اسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِیْمًا ﴿۶۴﴾

(پ۵،النساء:٦٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ महबूब ! तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों और फिर **अल्लाह** से मुआफ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअत फ़रमाए तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं।*

या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने अपने ऊपर ज़ुल्म किया है (या'नी गुनाह किये हैं) और आप की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हुवा हूं ताकि आप मेरे वासिते़ इस्तिग़फ़ार फ़रमाएं। क़ब्रे अन्वर से आवाज़ आई : "قَدْ غُفِرَ لَكَ" या'नी तह़क़ीक़ तेरे गुनाह बख़्श दिये गए हैं। (वफ़ाउल वफ़ा, जि. 2, स. 1361)

ऐब मह़शर में खुला ही चाहते थे मैं निषार
ढक के पर्दा अपने दामन का छुपाया शुक्रिया

(वसाइले बख़्शिश, स. 304)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾2﴿ दरे रसूल पर ह़ाज़िर होने वाला बख़्शा गया

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 413 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "उ़यूनुल ह़िकायात" ह़िस्सए दुवुम सफ़ह़ा 308 पर इमाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़र्ब हिलाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى ने बयान किया : एक मरतबा मैं रौज़ए रसूल पर ह़ाज़िर था कि एक आ'राबी (या'नी अ़रब के दीहात का रहने वाला) आया और हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ मह़शर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में इस त़रह़ अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! **अल्लाह** तआ़ला ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर जो सच्ची किताब नाज़िल फ़रमाई उस में येह आयत भी है :

www.dawateislami.net

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَ اسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿۶۴﴾

(پ۵،النساء:٦٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ महबूब ! तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों और फिर **अल्लाह** से मुआफ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअत फ़रमाएं तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं।

ऐ मेरे आक़ा व मौला (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! मैं **अल्लाह** ग़फ़ूर عَزَّ وَجَلَّ से अपने गुनाह व कुसूर की मुआफ़ी तलब करते हुए हाज़िरे दरबार हूं और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में अपना शफ़ीअ़ बनाता हूं।" येह कह कर वोह आ़शिक़े रसूल रोने लगा और उस की ज़बान पर येह अश्आ़र जारी थे :

يَا خَيْرَ مَنْ دُفِنَتْ بِالْقَاعِ اَعْظُمُهٗ فَطَابَ مِنْ طِيْبِهِنَّ الْقَاعُ وَالْاَكَمُ

رُوْحِی الْفِدَاءُ لِقَبْرٍ اَنْتَ سَاكِنُهٗ فِيْهِ الْعِفَافُ وَفِيْهِ الْجُوْدُ وَالْكَرَمُ

तर्जमा : (1)......ऐ वोह बेहतरीन ज़ात जिस का मुबारक वुजूद इस ज़मीन में दफ़्न किया गया तो इस की उ़म्दगी और पाकीज़गी से मैदान और टीले मुअ़त्तर हो गए।

(2)......मेरी जान फ़िदा हो उस क़ब्रे अन्वर पर जिस में आप (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) आराम फ़रमा हैं ! जिस में पाक दामनी, सख़ावत और अ़फ़्वो करम का बेश बहा ख़ज़ाना है।

वोह आ़शिक़े रसूल काफ़ी देर तक इन अश्आ़र की तकरार करता रहा, फिर अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगता हुवा अश्कबार आंखों से वहां से रुख़्सत हो गया। ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़र्ब हिलाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : जब मैं सोया तो ख़्वाब में सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से शरफ़याब हुवा, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : ''اِلْحَقِ الرَّجُلَ فَبَشِّرْهُ اَنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى قَدْ غَفَرَ لَهٗ بِشَفَاعَتِىْ'' या'नी उस आ'राबी से मिलो और उसे ख़ुशख़बरी सुनाओ कि **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ने मेरी सिफ़ारिश की वजह से उस की मग़फ़िरत फ़रमा दी है।'' (उ़यूनुल ह़िकायात, स. 378, मुलख़्ख़सन)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِىِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰلهٖ وسلَّم

सर गुज़िश्ते ग़म कहूं किस से तेरे होते हुए — किस के दर पर जाऊं तेरा आस्ताना छोड़ कर

बख़्शवाना मुझ से आ़सी का रवा होगा किसे !

किस के दामन में छुपूं दामन तुम्हारा छोड़ कर (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾3﴿ ऐ ज़ाइरे रौज़ए अन्वर ! मग़फ़िरत याफ़्ता लौट जाओ

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, रसूले मोह़्तशम, शाहे आदम व बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए मुअ़ज़्ज़म पर खड़े हो कर दुआ़ की :

www.dawateislami.net

"या रब्ब عَزَّ وَجَلَّ ! मैं ने तेरे ह़बीबे मुकर्रम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अत़्हर की ज़ियारत की, अब तू मुझे ना मुराद न लौटा।" आवाज़ आई : "ऐ बन्दे ! हम ने तुम्हें अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की पाकीज़ा तुर्बत की ज़ियारत की इजाज़त ही तब दी जब तुम्हें पाक करना मन्ज़ूर फ़रमाया, अब तुम और तुम्हारे साथ ज़ियारत करने वाले मग़फ़िरत याफ़्ता लौट जाओ बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम से और उन से राज़ी हो गया जिन्हों ने प्यारे नबी मुह़म्मदे मदनी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए पुर अन्वार का दीदार किया।"

(الروض الفائق ص۳۰۶)

__अल्लाह__ عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰلہٖ وسلّم

बुलाते हैं उसी को जिस की बिगड़ी येह बनाते हैं
कमर बन्धना दियारे त़यबाह को खुलना है क़िस्मत का

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تعالىٰ علىٰ محمَّد

﴾4﴿ देखो, मदीना आ गया !

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़वास عليه رَحْمَةُ اللهِ الجَوَاد फ़रमाते हैं : मैं एक सफ़र में शिद्दते प्यास से बेताब हो कर गिर पड़ा, तो किसी ने मेरे मुंह पर पानी छिड़का, मैं ने आंखें खोलीं तो क्या देखता हूं कि एक ह़सीनो जमील बुज़ुर्ग ख़ूब सूरत घोड़े पर सुवार खड़े हैं। उन्हों ने मुझे पानी पिलाया और फ़रमाया मेरे साथ सुवार हो जाओ।

www.dawateislami.net

अभी चन्द क़दम ही चले थे कि फ़रमाया : देखो ! क्या नज़र आ रहा है ? मैं ने कहा : ''येह तो मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا है।'' फ़रमाया : उतरो और जाओ, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में सलाम अ़र्ज़ करो और येह भी अ़र्ज़ करना कि ख़िज़्र (عَلَيْهِ السَّلَام) ने भी आप की ख़िदमत में सलाम अ़र्ज़ किया है। (روض الرّیاحین ص۱۲۶)

अल्लाह* عَزَّ وَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

किसी के हाथ ने मुझ को सहारा दे दिया वरना
कहां मैं और कहां येह रास्ते पेचीदा पेचीदा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾5﴿ सब्ज़ घोड़े सुवार

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू इमरान वासिती़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि मैं मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا से सूए मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार के दीदार की निय्यत से चला, रास्ते में मुझे इतनी सख़्त प्यास लगी कि मौत सर पर मन्डलाने लगी, निढाल हो कर एक कीकर के दरख़्त के नीचे बैठ गया। दफ़्अ़तन (या'नी यकायक) **सब्ज़ लिबास** में मलबूस एक **सब्ज़** घोड़े सुवार नुमूदार हुए, उन के घोड़े की लगाम और ज़ीन भी सब्ज़ थी नीज़ उन के हाथ में **सब्ज़** शरबत से लबालब **सब्ज़**

www.dawateislami.net

प्याला था, वोह उन्हों ने मुझे दिया और फ़रमाया : पियो ! मैं ने तीन सांस में पिया मगर उस प्याले में से कुछ भी कम न हुवा। फिर उन्हों ने मुझ से फ़रमाया : कहां जा रहे हो ? मैं ने कहा : मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا ताकि सरवरे कौनैन, रह़मते दारैन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और शैख़ैने करीमैन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُمَا की बारगाहों में सलाम अ़र्ज़ करूं। फ़रमाया : जब तुम वहां पहुंचों और अपना सलाम अ़र्ज़ कर लो तो उन तीनों बुलन्दो बाला हस्तियों से अ़र्ज़ करना कि **रिज़्वान** (फ़िरिश्ता, ख़ाज़िने जन्नत) भी आप ह़ज़रात की ख़िदमात में सलाम अ़र्ज़ करता है।

(رَوضُ الرَّیاحین ص۳۲۹)

__अल्लाह__ عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

जां बलब हूं जां बलब पर रह़्म कर
ऐ लबे ईसा दौरां अल ग़ियाष (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(6) दूसरे का सलाम पहुंचाने की बरकत से दीदार हो गया

एक बुज़ुर्ग رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه फ़रमाते हैं कि मैं अपने मुल्क, यमन के शहर सनआ़ से ब इरादए **ह़ज** निकला तो काफ़ी आ़शिक़ाने रसूल रुख़्सत करने के लिये शहर से बाहर तक आए। एक आ़शिक़े रसूल ने मुझ से कहा कि सरवरे कौनैन, रह़मते दारैन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم, ह़ज़राते शैख़ैने करीमैन और दीगर सह़ाबए किराम رِضۡوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡهِمۡ اَجۡمَعِيۡن की मुबारक ख़िदमातों में मेरा सलाम अ़र्ज़ कर

देना। जब मैं मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا हाज़िर हुवा तो उस आशिक़े रसूल का सलाम अ़र्ज़ करना भूल गया, जब वहां से रुख़्सत हो कर ज़ुलहुलैफ़ा पहुंचा और एहराम बांधने का इरादा किया तो मुझे उस आशिक़े रसूल का सलाम पहुंचाना याद आ गया। मैं ने अपने रुफ़क़ा से कहा कि मेरे वापस आने तक मेरे ऊंट का ख़याल रखना, मुझे मदीनए तय्यिबा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا एक ज़रूरी काम के लिये जाना है। साथियों ने कहा कि अब क़ाफ़िले की रवानगी का वक़्त है और हमें अन्देशा है कि अगर तुम क़ाफ़िले से जुदा हो गए तो फिर इसे मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا तक भी न पा सकोगे। मैं ने कहा : तो फिर मेरी सुवारी को भी अपने साथ ही लेते जाना।

मैं वापस मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا आया और रौज़ए अक़्दस पर हाज़िर हो कर उस आशिक़े रसूल का सलाम शहनशाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और ह़ज़राते सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मुबारक बारगाहों में पेश किया। रात हो चुकी थी, मैं मस्जिदुन्नबविय्यिशरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से बाहर निकला तो एक शख़्स ज़ुलहुलैफ़ा की त़रफ़ से आता हुवा मिला, मैं ने उस से क़ाफ़िले के मुतअ़ल्लिक़ पूछा। उस ने बताया कि क़ाफ़िला रवाना हो चुका है। मैं मस्जिदुन्नबविय्यिशरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में लौट आया और ख़याल किया कि किसी दूसरे क़ाफ़िले के साथ चला जाऊंगा और सो गया। आख़िरे शब में ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की ज़ियारत से शरफ़याब हुवा। ह़ज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! येही वोह शख़्स है ।'' हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी त़रफ़ देखा और फ़रमाया : ''**अबुल वफ़ा** !'' मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी कुन्यत तो अबुल अ़ब्बास है । फ़रमाया : तुम **अबुल वफ़ा** (या'नी वफ़ादार) हो । फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में और वोह भी ख़ास मस्जिदुल ह़राम में रख दिया ! मैं ने **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में 8 दिन तक क़ियाम किया । इस के बा'द मेरे रुफ़क़ा का क़ाफ़िला मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا पहुंचा ।

(رَوضُ الرَّیاحین ص ۳۲۲)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो ।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ग़मज़दों को रज़ा मुज़्दा दीजे कि है
बे कसों का सहारा हमारा नबी

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾7﴿ ह़ाज़िरीन ने रौज़ए अन्वर से जवाबे सलाम सुना

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुन्नस्र अ़ब्दुल वाह़िद बिन अ़ब्दुल मलिक बिन मुह़म्मद बिन अबू सईद सूफ़ी कर्ख़ी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं **ह़ज** से फ़ारिग़ हो कर मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا आया और रौज़ए अन्वर पर ह़ाज़िर हुवा, हुजरए

शरीफ़ा के पास बैठा हुवा था कि ह़ज़रते शैख़ अबू बक्र दियार बिकरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی तशरीफ़ लाए और चेहरए अन्वर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने खड़े हो कर अ़र्ज़ किया : اَلسَّلَامُ عَلَيۡكَ يَارَسُوۡلَ اللهِ तो मैं ने और तमाम ह़ाज़िरीन ने सुना कि रौज़ए अन्वर के अन्दर से आवाज़ आई : وَعَلَيۡكَ السَّلَامُ يَا اَبَابَكۡرٍ

(اَلْحَاوِی لِلْفَتَاوِی ج ۲ ص ۳۱٤)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

वोह सलामत रहा क़ियामत में — पढ़ लिये जिस ने दिल से चार सलाम
उस जवाबे सलाम के सदक़े — ता क़ियामत हों बे शुमार सलाम

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

وَعَلَيۡكَ السَّلَامُ يَا وَلَدِیۡ ﴿8﴾

ह़ज़रते शैख़ सय्यिद नूरुद्दीन ईजी رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡهِ जब रौज़ए अक़्दस पर ह़ाज़िर हुए तो अ़र्ज़ किया : اَلسَّلَامُ عَلَيۡكَ اَيُّهَا النَّبِیُّ وَرَحۡمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ तो जितने लोग उस वक़्त वहां ह़ाज़िर थे उन सब ने सुना कि रौज़ए अन्वर से जवाब आया : وَعَلَيۡكَ السَّلَامُ يَاوَلَدِیۡ (या'नी और तुझ पर सलाम हो ऐ मेरे बेटे !)

(اَلْحَاوِی لِلْفَتَاوِی ج ۲ ص ۳۱٤)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तुम को तो ग़ुलामों से है कुछ ऐसी मह़ब्बत
है तर्के अदब वरना कहें हम पे फ़िदा हो ! (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ يا مُحَمَّد هاشِمُ التَّتوى ﴿9﴾

शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना मख़्दूम मुह़म्मद हाशिम ठठवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने जब मदीनतुल मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में रौज़ए अन्वर पर ह़ाज़िर हो कर सलातो सलाम अ़र्ज़ किया तो प्यारे प्यारे आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आवाज़े मुबारका सुनाई दी : ''وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ يا مُحَمَّد هاشِمُ التَّتوى۔''

(अन्वारे उ़-लमाए अहले सुन्नत, सिन्ध, स. 714, मुलख़्ख़सन)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

ऐ मदीने के ताजदार सलाम — ऐ ग़रीबों के ग़मगुसार सलाम
तेरी इक इक अदा पे ऐ प्यारे — सो दुरूदें फ़िदा हज़ार सलाम

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تعالىٰ على محمَّد

﴿10﴾ क़ब्रे अन्वर से दस्ते मुबारक निकला

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ सय्यिद अह़मद कबीर रिफ़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जब ह़ज से फ़ारिग़ हो कर मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا रौज़ए अन्वर पर ह़ाज़िर हुए तो अ़रबी में दो अश्आ़र पढ़े जिन का तर्जमा येह है : ﴿1﴾......दूरी की ह़ालत में, मैं अपनी रूह़ को ख़िदमते अक़्दस में भेजा करता था तो वोह मेरी नाइब बन कर आस्तानए मुबारका को चूमा करती थी

www.dawateislami.net

﴾2﴿......और अब बदन के साथ ह़ाज़िर हो कर मिलने की बारी आई है तो अपना दस्ते मुबारक दराज़ फ़रमाइये ताकि मेरे होंट उस को चूमें। जूंही अश्आ़र ख़त्म हुए **दस्ते अन्वर क़ब्रे मुनव्वर से बाहर निकला और उन्हों ने उस को चूमा।** (اَلْحَاوِی لِلْفَتَاوِی ج ٢ ص ٣١٤)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

वाह क्या जूदो करम है शहे बत़्ह़ा तेरा
नहीं सुनता ही नहीं मांगने वाला तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾11﴿ मैं सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास आया हूं

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद बिन अबू सालेह़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : दो जहान के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के आस्ताने अ़र्श निशान पर एक दिन ख़लीफ़ा मरवान ह़ाज़िर हुवा, वहां उस ने एक साहि़ब को क़ब्रे मुनव्वर पर मुंह रखे हुए देखा तो उस की गर्दन पर हाथ रख कर कहा : जानते हो क्या कर रहे हो ? वोह **"हां जानता हूं"** कह कर उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए तो वोह मह़बूबे बारी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मश्हूर सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ थे। फ़रमाया : मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा अ़ज़मत में ह़ाज़िर

www.dawateislami.net

हुवा हूं किसी पथ्थर के पास नहीं आया और मैं ने रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि दीन पर उस वक़्त न रोओ जब कि इस का वाली अहल (या'नी लाइक़) हो लेकिन उस वक़्त ज़रूर रोओ जब कि इस का वाली ना अहल (या'नी ना लाइक़) हो। (اَلْمُستَدرَك ج٥ ص٧٢٠ حديث٨٦١٨)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واله وسلَّم

उ़श्शाक़े रौज़ा सजदे में सूए ह़रम झुके
अल्लाह जानता है कि निय्यत किधर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾12﴿ सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने खाना भिजवाया

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू बक्र बिन मुक़री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मैं और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम त़बरानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورَانِى और ह़ज़रते सय्यिदुना अबुश्शैख़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه हम तीनों मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में ह़ाज़िर थे, दो दिन से खाना नहीं मिला था, भूक से निढाल हो चुके थे। जब इशा का वक़्त आया तो मैं ने रौज़ए पाक पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! "اَلْجُوع!" या'नी ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! "भूक !" मैं ने इस के सिवा और कुछ

ज़बान से न कहा और लौट आया, मैं और अबुश्शैख़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه सो गए और त़बरानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورَانِی बैठे किसी के आने का इन्तिज़ार कर रहे थे, इतने में किसी ने हमारे मकान पर दस्तक दी, हम ने दरवाज़ा खोला तो एक अ़लवी साहि़ब अपने दो गुलामों के हमराह तशरीफ़ लाए, दोनों के पास खाने से भरी हुई एक एक टोकरी थी, वोह अ़लवी बुज़ुर्ग कहने लगे : शायद आप साहि़बान ने बारगाहे रिसालत में **भूक** की शिकायत की है क्यूंकि मैं ख़्वाब में **जनाबे रिसालत मआब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से शरफ़याब हुवा, सरवरे काइनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप ह़ज़रात के बारे में फ़रमा रहे थे : "**इन को खाना खिलाओ ।**" बहर ह़ाल उन्हों ने हमारे साथ मिल कर खाना खाया और जो कुछ बच गया वोह हमें दे दिया और तशरीफ़ ले गए । (جَذبُ القُلوب ص ۲۰۷ ، وفاء الوفا ج۲ص۱۳۸۰)

अल्लाह *عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो ।*

اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عليه واٰله وسلَّم

सरकार खिलाते हैं सरकार पिलाते हैं

सुल्त़ानो गदा सब को सरकार निभाते हैं

(वसाइले बख़्शिश, स. 330)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾13﴿ सरकार ने खाना खिलाया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारे मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

अपने गुलामों पर नज़रे करम फ़रमाते, मुसीबत में फंस जाने की सूरत में इमदाद को आते और भूकों को खाना खिलाते हैं, इस ज़िम्न में एक और हिकायत मुलाहज़ा हो, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी قُدِّسَ سِرُّہُ النّوْرَانِی नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन नफ़ीस तूनिसी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं एक बार मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में सख़्त भूक के आ़लम में सरकारे आ़ली वक़ार, मक्के मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर दगार ग़ैबों पर ख़बरदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! मैं भूका हूं। यकायक आंख लग गई, दर्रो अष्ना किसी ने जगा दिया और मुझे साथ चलने की दा'वत दी, चुनान्चे मैं उन के साथ उन के घर आया, मेज़बान ने खजूरें, घी और गन्दुम की रोटी पेश कर के कहा : पेट भर कर खा लीजिये क्यूंकि मुझे मेरे जद्दे अमजद, मक्की मदनी **मुह़म्मद** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप की मेज़बानी का हुक्म दिया है। आयन्दा भी जब कभी भूक मह़सूस हो हमारे पास तशरीफ़ लाया करें। (حُجَّۃُ اللّٰہِ عَلَی الْعٰلَمِین ص٥٧٣)

पीते हैं तेरे दर का, खाते हैं तेरे दर का

पानी है तेरा पानी, दाना है तेरा दाना (सामाने बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾14﴿ सरकार ने दिरहम अ़ता फ़रमाए

हज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मुह़म्मद सूफ़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं तीन महीनों तक जंगलों में फिरता रहा यहां तक कि मेरी सब खाल गल गई । बिल आख़िर मैं मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا हाज़िर हुवा और मैं ने ग़मज़दों के दिलों के चैन, सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡھُمَا की बारगाहों में सलाम अ़र्ज़ किया और सो गया । ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से शरफ़याब हुवा, आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमा रहे थे : **''अह़मद''** तू आ गया, देख क्या ह़ाल हो गया है ! मैं ने अ़र्ज़ की : اَنَا جَائِعٌ وَاَنَا ضَیۡفُکَ یَا رَسُوۡلَ اللّٰہ صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم या'नी या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! मैं भूका हूं और **आप का मेहमान हूं ।** सरकारे दो जहां, मालिके कौनो मकां صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **''हाथ खोल''** ! जब मैं ने अपना हाथ खोला तो उस में चन्द **दिरहम** थे, जब आंख खुली तो वोह दिरहम मेरे हाथ में मौजूद थे, मैं ने बाज़ार से जा कर **रोटी** और **फ़ालूदा** ख़रीद कर खाया । (جَذبُ القُلوب ص٢٠٧،وفاء الوفاء ج ٢ ص ١٣٨١)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الۡاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

मंगता तो हैं मंगता कोई शाहों में दिखा दे

जिस को मेरे सरकार से टुकड़ा न मिला हो ! (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾15﴿ सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने रोटी अ़ता फ़रमाई

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्नुल जला رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में ह़ाज़िर हुवा और मुझ पर दो एक फ़ाक़े गुज़रे । सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : اَنَا ضَيْفُكَ يَا رَسُوْلَ الله صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم या'नी "या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मैं आप का मेहमान हूं ।" फिर मुझ पर नींद का ग़लबा हुवा । वालिये दो जहान, रह़मते आ़लमियान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर मुझे **एक रोटी** इनायत फ़रमाई, मैं ख़्वाब ही में खाने लगा, अभी आधी खाई थी कि आंख खुल गई, मज़ीद आधी अभी मेरे हाथ में बाक़ी थी ।

(جَذبُ القُلوب ص ٢٠٧ ، وفاء الوفا ج٢ص ١٣٨٠)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो ।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾16﴿ जागा तो आधी रोटी हाथ में थी !

हज़रते सय्यिदुना अबुल ख़ैर رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی علَیْه फ़रमाते हैं : मैं प्यारे प्यारे आक़ा, मक्के मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक शहर मीठे मीठे मदीने में हाज़िर हुवा तो **पांच दिन के फ़ाक़े** से था, मैं ने शहनशाहे कौनैन صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُمَا की मुक़द्दस बारगाहों में भी सलाम पेश किया : फिर अ़र्ज़ की : اَنَا ضَيْفُكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه या'नी "या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मैं आप का मेहमान हूं।" इस के बा'द मिम्बरे मुनव्वर के पास जा कर सो गया सर की आंखें तो क्या बन्द हुई दिल की आंखें खुल गईं, करम बालाए करम हो गया और मैं ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार से शरफ़याब हुवा, शैख़ैने करीमैन और मौला मुश्किल कुशा **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان भी हमराह थे, मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने मुझे हिलाया और फ़रमाया : "उठो ! महबूबे ख़ुदा, अहमदे मुज्तबा, **मुहम्मदे मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए हैं।" मैं ने उठ कर (ख़्वाब ही ख़्वाब में) हबीबे रब्बे क़य्यूम صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की नूरानी पेशानी चूम ली। नबिय्ये रहमत صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे एक रोटी इनायत फ़रमाई, मैं ने आधी ख़्वाब ही में खा ली और जब आंख खुली तो बाक़ी **आधी रोटी** मेरे हाथ में थी।

(شواهد الحق فی الاستغاثة بسيدالخلق ص ٢٤٠)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰه تعالٰی علیه واٰلہٖ وسلَّم

सरकार खिलाते हैं सरकार पिलाते हैं
सुल्तानो गदा सब को सरकार निभाते हैं

(वसाइले बख़्शिश, स. 330)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾17﴿ शुक्र एक करम का भी अदा हो नहीं सक्ता

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इमरान मूसा बिन मुह़म्मद बन्ज़रती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मैं मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में ह़ाज़िर था, माली परेशानी की फ़रियाद ले कर **सरकारे** वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : يَاحَبِيْب، يَارَسُوْلَ اللّٰه! اَنَا فِى ضِيَافَةِ اللّٰهِ وَضِيَافَتِك मैं **अल्लाह** तआ़ला और आप की ज़ियाफ़त (या'नी मेहमानी) में हूं। नमाज़े अ़स्र के इनतिज़ार में बैठे बैठे मुझे ऊंघ आ गई। क्या देखता हूं कि हुजरए मुबारक खुल गया है और इस में से **तीन ह़ज़रात** बाहर तशरीफ़ लाए हैं, मैं शहनशाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में सलाम पेश करने के लिये उठने लगा तो मेरे साथ बैठे हुए शख़्स ने कहा : बैठ जाओ, क्यूंकि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تَعَालٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **हुज्जाजे किराम** को "सलाम" का तोह़फ़ा इनायत करना और जो बे सरो सामान हैं उन में "खाना" तक़सीम फ़रमाना चाहते हैं। मैं ने कहा : "मैं भी इन्हीं में से हूं।" चुनान्चे जब ह़बीबे ख़ुदा, अह़मदे मुजतबा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो **हुज्जाज** को सलाम इर्शाद फ़रमाया : मैं ने भी

www.dawateislami.net

मुसाफ़ह़ा और दस्त बोसी का शरफ़ ह़ासिल किया । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ल्वे की मानिन्द कोई चीज़ मेरे हाथ में रख दी जो मैं ने उसी वक़्त मुंह में डाल ली । जब आंख खुली तो उस को निगलने के लिये मुंह चला रहा था और उस चीज़ का ज़ाइक़ा भी मुंह में मौजूद था । जब बाहर निकला तो **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे ऐसा शख़्स मुहय्या फ़रमा दिया जिस ने बिला उजरत सुवारी का बन्दोबस्त कर दिया और एक शख़्स की ज़िम्मेदारी लगा दी जो मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا पहुंचने तक मेरी ख़िदमत करता रहा । (شواهد الحق ص ۲٤۱ ملخّصًا)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो ।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

शुक्र एक करम का भी अदा हो नहीं सकता
दिल तुम पे फ़िदा हो जाने ह़सन तुम पे फ़िदा हो (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾18﴿ मांगो तो बड़ी चीज़ मांगो

एक शख़्स का बयान है कि मैं मदीनए त़य्यिबा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में मुक़ीम था, मुझे भूक ने परेशान किया तो मज़ारे अक़्दस पर ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : يارسولَ الله!اَلْجُوْع या'नी या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मैं भूका हूं।" येह अ़र्ज़ करने के बा'द मैं हुजरए मुबारका के क़रीब ही बैठ गया । **एक सय्यिद साह़िब** मेरे पास तशरीफ़ लाए और कहा : "चलिये ।" मैं ने

www.dawateislami.net

पूछा : "किधर ?" जवाब दिया : "हमारे घर पर ताकि आप कुछ खा पी लें।" मैं उन के साथ चल दिया, उन्हों ने मुझे षरीद का एक बहुत बडा पियाला दिया जिस में गोश्त और ज़ैतून शरीफ़ वाफ़िर (या'नी कषीर) मिक़्दार में था। मैं ने ख़ूब खाया और वापसी का इरादा किया, उन्हों ने फ़रमाया : "मज़ीद खाइये।" मैं ने थोड़ा और खा लिया, जब वापस होने लगा तो उन्हों ने नसीह़त के **मदनी फूल** मेरी त़रफ़ बढ़ाते हुए फ़रमाया : "ऐ भाई ! ज़रा सोचिये तो सही !" आप ह़ज़रात कितने दूर दराज़ अ़लाक़ों से चलते जंगलो बियाबान तै़ करते, समुन्दर को उ़बूर करते हो, अहलो इयाल को पीछे छोड़ते हो और फिर कहीं हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िरी से मुशर्रफ़ होते हो, मगर यहां पहुंच कर आप का मुन्तहाए मक़्सूद (या'नी सब से बडा मक़्सद) येही रह जाता है कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! रोटी का टुकड़ा अ़त़ा कर दीजिये ! ऐ मेरे भाई ! अगर आप ने **जन्नत** मांगी होती, गुनाहों की **मग़फ़िरत** का सुवाल किया होता, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के **प्यारे ह़बीब** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ामन्दी का मुत़ालबा किया होता या इसी क़िस्म का कोई अ़ज़ीम मक़्सद व मुद्दआ़ इन के हु़ज़ूर पेश किया होता तो सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत से वोह **अ़ज़ीम मक़ासिद** भी ह़ासिल हो जाते। (शवाहिदुल ह़क़्क़, स. 240)

***अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हि़साब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

मांगेंगे मांगे जाएंगे मुंह मांगी पाएंगे
सरकार में न "ला" है न ह़ाजत "अगर" की है

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह ज़ेह्न में रहे ! सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से अपनी भूक की फ़रियाद करने में مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कोई क़बाह़त (या'नी ऐ़ब) नहीं, बल्कि येह भी बहुत बड़ी सआ़दत है और इस सिलसिले में मुतअ़द्दिद उ़-लमा व मोह़द्दिषीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن की **ह़िकायात** पीछे गुज़रीं । ताहम सय्यिद साह़िब के **मदनी फूल** भी अपनी जगह मदीना मदीना हैं कि जब ब अ़त़ाए रब्बुल उ़ला कुल आ़लम के सख़ी दाता, मकीने गुम्बदे ख़ज़रा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे गोहरबार में दामन पसारा है तो कम क्यूं मांगे ? आप की बारगाह में तो दुन्या व आख़िरत की बहुत सारी भलाइयों का सुवाल करना चाहिये । मालो जान की ह़िफ़ाज़त, दीनो ईमान पर इस्तिक़ामत, मीठे मदीने में आ़फ़िय्यत के साथ शहादत, बक़ीअ़ शरीफ़ में जाए तुर्बत, बे ह़िसाब मग़फ़िरत और जन्नतुल फ़िरदौस में ख़ुद उन ही का जवारे रह़मत मांग लेना चाहिये ।

मांगने का शुऊ़र देते हैं   जो भी मांगो हुज़ूर देते हैं

कम मांग रहे हैं न सिवा मांग रहे हैं
जैसा है ग़नी वैसी अ़त़ा मांग रहे हैं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾19﴿ आ'ला ह़ज़रत عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ رَبِّ الۡعِزَّت ने मिना में दुआ़ए मग़फ़िरत करवाई

इसी त़रह़ किसी बुज़ुर्ग से हुस्ने अ़क़ीदत और बारगाहे इलाही में उन की मक़्बूलिय्यत होने का हुस्ने ज़न क़ाइम हो तो उन से फ़क़त़ दुन्यवी ह़ाजत पूरी होने की दुआ़ की दरख़्वास्त करने के बजाए बे ह़िसाब मग़फ़िरत की दुआ़ का भी कहना चाहिये। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡه का बुज़ुर्गों से सिर्फ़ दुआ़ए मग़फ़िरत करवाने का मा'मूल था। चुनान्चे फ़रमाते हैं : (पहली बार ह़ाज़िरिये मदीना के मौक़अ़ पर जब मिना शरीफ़ की मस्जिद में से सब लोग चले गए) तो मस्जिद के अन्दरूनी ह़िस्से में एक साह़िब को देखा कि क़िब्ला रू वज़ीफ़े में मस्रूफ़ हैं, मैं सह़ने मस्जिद में दरवाज़े के पास था और कोई तीसरा मस्जिद में न था। यकायक एक आवाज़ गुनगुनाहट की सी अन्दर मस्जिद के मा'लूम हुई जैसे शहद की मख्खी बोलती है। फ़ौरन मेरे क़ल्ब में येह ह़दीष आई : "अहलुल्लाह के क़ल्ब से ऐसी आवाज़ निकलती है जैसे शहद की मख्खी बोलती है।" (المستدرک ج۲ ص ۱۸۰ حدیث ۱۸۹۸)

मैं वज़ीफ़ा छोड़ कर उन की त़रफ़ चला कि इन से दुआ़ए मग़फ़िरत कराऊं, कभी मैं किसी बुज़ुर्ग के पास بِحَمۡدِ اللّٰہِ تَعَالٰی दुन्यावी ह़ाजत ले कर न गया, जब (भी) गया इसी ख़याल से कि उन से **दुआ़ए मग़फ़िरत** करवाऊंगा। ग़रज़ दो ही क़दम उन की त़रफ़ चला था कि उन बुज़ुर्ग ने मेरी त़रफ़ मुंह कर के आस्मान की त़रफ़ हाथ उठा कर तीन मरतबा फ़रमाया :

"اَللّٰھُمَّ اغۡفِرۡ لِاَخِیۡ ھٰذَا، اَللّٰھُمَّ اغۡفِرۡ لِاَخِیۡ ھٰذَا، اَللّٰھُمَّ اغۡفِرۡ لِاَخِیۡ ھٰذَا"

(ऐ **अल्लाह** मेरे इस भाई को बख़्श दे, ऐ **अल्लाह** मेरे इस भाई की मग़फ़िरत फ़रमा, ऐ **अल्लाह** मेरे इस भाई को मुआफ़ फ़रमा।) मैं ने समझ लिया कि फ़रमाते हैं ''हम ने तेरा काम कर दिया अब तू हमारे काम में मुख़िल (रुकावट) न हो। मैं वैसे ही लौट आया।''

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 490)

दा'वा है सब से तेरी शफ़ाअ़त पे बेशतर
दफ़्तर में आ़सियों के शहा, इन्तिख़ाब हूं

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

﴾20﴿ तुम ज़ियारत को न आए तो हम आ गए

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन बुनानुल ह़म्माल علیہ رحمۃ اللہ الجلال फ़रमाते हैं कि हमारे बा'ज़ दोस्तों ने बताया कि मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में एक बुज़ुर्ग थे जो ''इब्ने षाबित'' के नाम से मश्हूर थे, वोह मुतवातिर 60 साल तक हर साल फ़क़त शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में सलाम अ़र्ज़ करने की निय्यत से मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا ह़ाज़िर होते रहे। एक साल किसी वजह से ह़ाज़िर न हो सके तो एक दिन उन्हों ने अपने हुजरे में बैठे हुए कुछ ग़ुनूदगी की ह़ालत में ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमा रहे थे : **''इब्ने षाबित ! तुम हमारी ज़ियारत को न आए तो हम आ गए।''** (اَلْحَاوِی لِلْفَتَاوٰی ج۲ص۳۱۶)

अल्लाह *عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

देखी जो बे कसी तो उन्हें रह़्म आ गया
घबरा के हो गए वोह गुनहगार की त़रफ़ (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى علٰى محمَّد

﴾21﴿ हम ने तुम्हारा उ़ज़्र क़बूल कर लिया है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल फ़ज़्ल मुह़म्मद बिन नुऐम رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन या'ला किनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانى कषरत से नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस तुर्बत की ज़ियारत किया करते थे, नीज़ अकषर ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदारे फ़ैज़े आषार से भी शरफ़याब होते थे। एक दिन दरबारे ह़बीब की ह़ाज़िरी के इरादे से निकले लेकिन पाऊं में चोट लगने के सबब सफ़रे मदीना जारी न रख सके। आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡه ने एक रुक़्आ़ लिख कर किसी ह़ाजी को दिया और फ़रमाया : "मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعۡظِيۡمًا में मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार के क़रीब मेरा येह रुक़्आ़ रख कर अ़र्ज़ करना : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! किनानी मअ़स्सलाम मुल्तजी है कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जानते हैं कि किनानी की ह़ाज़िरी में क्या चीज़ रुकावट बनी है !" उस शख़्स ने ऐसा ही किया। ह़ज़रते सय्यिदुना किनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانى के ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तशरीफ़ ला कर इर्शाद फ़रमाया : "ऐ किनानी ! तुम्हारा ख़त़ पहुंच गया है और हम ने तुम्हारा उ़ज़्र भी क़बूल कर लिया है।" (الروض الفائق ص٣٠٦)

पास वाले येह राज़ क्या जानें दूर से भी सलाम होता है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى علٰى محمَّد

www.dawateislami.net

﴾22﴿ बेटा क़ैद से रिहा हो गया

हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद अज़दी अन्दलुसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि **अन्दलुस** में रूमियों ने एक आ़शिक़े रसूल के फ़रज़न्द को क़ैद कर लिया। वोह साहिब बारगाहे रिसालत मआब में फ़रियाद के इरादे से सूए मदीना रवाना हो गए। सरे राह बा'ज़ शनासाओं (या'नी जानने वालों) से मुलाक़ात हुई, बर सबीले तज़किरा उन साहिबान ने कहा : प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से तो घर बैठे भी इस्तिग़ाषा (या'नी फ़रियाद) की जा सकती है, इस मक़्सद के लिये ह़ाज़िरी ही ज़रूरी नहीं, लेकिन उन्हों ने सफ़रे मदीना जारी रखा। मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا पहुंच कर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी से मुशर्रफ़ हुए और बा'दे सलाम अपना मुद्दआ़ अ़र्ज़ किया। करम ने यावरी की, रात ख़्वाब में सरवरे काइनात صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ज़ियारत बख़्शी और इर्शाद फ़रमाया : "अपने शहर पहुंचों, तुम्हारा मक़्सद पूरा हो चुका है।" जब वोह अपने वत़न पहुंचे तो उन का फ़रज़न्दे दिलबन्द (या'नी प्यारा बेटा) सचमुच घर आ चुका था, इस्तिफ़्सार पर बेटे ने बताया : फ़ुलां रात मुझ समेत बहुत सारे क़ैदियों को रूमियों की क़ैद से अचानक रिहाई नसीब हो गई ! जब आ़शिक़े रसूल ने हिसाब लगाया तो येह वोह रात थी जिस में ख़्वाब के अन्दर बिशारत मिली थी। (शवाहिदुल ह़क़्क़, स. 225)

***अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِين بِجاهِ النَّبِىِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

www.dawateislami.net

मिटते हैं जहां भर के आलाम मदीने में बिगड़े हुए बनते हैं सब काम मदीने में
आक़ा की इनायत है हर गाम मदीने में जाता नहीं कोई भी नाकाम मदीने में

(वसाइले बख़्शिश, स. 401)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(23) ग़ैबदान आक़ा ने ख़्वाब में बारिश की बिशारत दी

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के मोह़तरम उस्ताद ह़ज़रते इमाम इब्ने अबी शैबा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के दौरे ख़िलाफ़त में क़ह़त़ साली हुई, एक साह़िब हुज़ूरे अन्वर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अत़हर पर ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! अपनी उम्मत के लिये बारिश त़लब फ़रमाइये, कि लोग हलाक हो रहे हैं।" जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन साह़िब के ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर इर्शाद फ़रमाया : उ़मर के पास जा कर मेरा सलाम कहो और उन को ख़बर दो कि बारिश होगी। (مُصَنَّف ابن أبی شَیبہ ج ۷ ص ٤٨٢ حدیث ۳۵ مختصراً، فتاوٰی رضویہ ج۹ ص ۲۹۵) वोह साह़िब सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ थे। (فتحُ الباری ج ۳ ص ٤٣٠ تحتَ الحدیث ١٠١٠) ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورَانِی ने फ़रमाया : येह रिवायत इमाम इब्ने अबी शैबा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सह़ीह़ अस्नाद के साथ बयान की है। (ऐज़न)

***अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

www.dawateislami.net

बरसता नहीं देख कर अब्रे रह़मत
बदों पर भी बरसा दे बरसाने वाले

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾24﴿ कुंवें से रिहाई दिलवाई

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मुह़म्मद सलावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : एक बार जब मैं सफ़र पर रवाना होने लगा तो सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "या सय्यिदल कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! दौराने सफ़र मेरा **सह़रा** व **बयाबान** से गुज़र होगा, जब कोई मुसीबत दरपेश हुई तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से दुआ़ करूंगा और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का वसीला इख़्तियार करूंगा।" शैख़ैने करीमैन ह़ज़राते सय्यिदैना अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर भी इसी त़रह़ अ़र्ज़ की। हफ्ताभर जंगलो बयाबान में सफ़र करता रहा, **उसी दौरान एक कुंवें के अन्दर गिर गया,** उस में काफ़ी पानी था, चाश्त से ले कर अ़स्र के बा'द तक कुंवें में ग़ोते़ खाता रहा, मौत सर पर मन्डला रही थी कि इतने में बारगाहे रह़मते कौनैन और शैख़ैने करीमैन से रुख़्सत होते वक़्त जो कुछ अ़र्ज़ किया था, याद आ गया चुनान्चे मैं ने अ़र्ज़ की : "या ह़बीबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم)! मेरी इल्तिजा क़बूल करते हुए मेरी दस्तगीरी फ़रमाइये।" और इसी त़रह़ ह़ज़राते शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से दरख़्वास्त की, देखते ही देखते किसी ने मुझे कुंवें की तह से उठा कर मुन्डेर पर बिठा दिया ! यूं मैं मह़बूबे रब्बुल इ़बाद عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم की इमदाद से

www.dawateislami.net

मौत के मुंह से बाहर निकल आया। (शवाहिदुल ह़क़्क़ स. 231)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

फ़रियाद उम्मती जो करे ह़ाले ज़ार में
मुमकिन नहीं कि ख़ैरे बशर को ख़बर न हो

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

फ़ेहरिस

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	﴾12﴿ सरकार صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने खाना भिजवाया	14
ज़ाइरीने मदीना की 24 ह़िकायात	2	﴾13﴿ सरकार ने खाना खिलाया	15
﴾1﴿ रौज़ए पाक से बिशारत	2	﴾14﴿ सरकार ने दिरहम अ़ता फ़रमाए	17
﴾2﴿ दरे रसूल पर ह़ाज़िर होने वाला बख़्शा गया	3	﴾15﴿ सरकार صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने रोटी अ़ता फ़रमाई	18
﴾3﴿ ऐ ज़ाइरे रौज़ए अन्वर ! मग़फ़िरत याफ़्ता लौट जाओ	5	﴾16﴿ जागा तो आधी रोटी हाथ में थी !	19
﴾4﴿ देखो मदीना आ गया !	6	﴾17﴿ शुक्र एक करम का भी अदा हो नहीं सकता	20
﴾5﴿ सब्ज़ घोड़े सुवार	7	﴾18﴿ मांगो तो बड़ी चीज़ मांगो	21
﴾6﴿ दूसरे का सलाम पहुंचाने की बरकत से दीदार हो गया	8	﴾19﴿ आ'ला ह़ज़रत ने मिना में दुआए मग़फ़िरत करवाई	24
﴾7﴿ ह़ाज़िरीन ने रौज़ए अन्वर से जवाबे सलाम सुना	10	﴾20﴿ तुम ज़ियारत को न आए तो हम आ गए	25
﴾8﴿ وَعَلَيْكَ السَّلَامُ يَا وَلَدِى	11	﴾21﴿ हम ने तुम्हारा उ़ज़्र क़बूल कर लिया है	26
﴾9﴿ وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ يَا مُحَمَّد هَاشِمُ التَّتوِى	12	﴾22﴿ बेटा क़ैद से रिहा हो गया	27
﴾10﴿ क़ब्रे अन्वर से दस्ते मुबारक निकला	12	﴾23﴿ ग़ैबदान आक़ा ने ख़्वाब में बारिश की बिशारत दी	28
﴾11﴿ मैं सरकार صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के पास आया हूं	13	﴾24﴿ कुंवें से रिहाई दिलवाई	29

www.dawateislami.net

तयबा को चलो तयबा ! **अल्लाह** 15 जुल हिज्जतिल हराम 1440 हि.

क़ाफ़िला सूए मदीना आ रहा है हो करम

क़ाफ़िला सूए मदीना आ रहा है हो करम
सोज़िशे सीना अ़ता हो या नबी दो चश्मे नम

क़ाफ़िला अब चल मदीना का चला सूए ह़रम
या रसूलल्लाह ! सब पर कीजिये चश्मे करम

क़ाफ़िले में चल मदीना के हैं जितने भी शरीक
सब पे हो रह़मत ख़ुदा की मुस्त़फ़ा का हो करम

शाहे वाला ! मैं गुनहगारों का भी सरदार हूं
तुम शहे अबरार हो या सय्यिदे अ़रबो अ़जम

फ़ज़्ले रब से आप तो हर चीज़ के मुख़्तार हैं
अ़र्शे आ'ज़म आप का है, आप के लौह़ो क़लम

या नबी मुझ को बना दो तुम मदीने का फ़क़ीर
मैं नहीं, हरगिज़ नहीं हूं त़ालिबे जाहो ह़शम

या नबी ! हम को शफ़ाअ़त की अ़ता ख़ैरात हो
आ़सियों का आप के हाथों में है आक़ा भरम

गुम्बदे ख़ज़रा को चूमे जिस घड़ी मेरी नज़र
उस घड़ी अल्लाह ! देखूं जल्वए शाहे उमम

15 जुल हिज्जतिल हराम 1440 हि.
15-08-2019

दम लबों पर आ गया अ़त्तार का या मुस्त़फ़ा
हो करम शाहे ह़रम ! निकले तेरे जल्वों में दम

(मक्कए मुकर्रमा में 14 जुल हिज्जा 1440 हि. को सात अश्आ़र लिखे, फिर 15वीं रात मदीनए पाक जाते हुए ट्रेन में नोक पलक संवारी और दो अश्आ़र का इज़ाफ़ा किया।)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मस्जिद बनाने का सवाब

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **: जो अल्लाह** पाक (की रिज़ा) के लिये एक मस्जिद बनाएगा तो अल्लाह पाक उस के लिये जन्नत में एक घर बना देगा।

(مشکاۃ المصابیح، ۱/۱۴۷، حدیث:۶۹۷)

M.R.P. ₹ 00/-

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Teen koniya Baghicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 *T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net